Toppersnotes
Unleash the topper in you

फायरमैन

राजस्थान

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग – 1

सामान्य हिन्दी एवं राजस्थान का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

फायरमैन (राजस्थान)

सामान्य हिन्दी एवं राजस्थान का सामान्य अध्ययन

हिन्दी

1.	संधि	1
2.	समास	7
3.	उपसर्ग	11
4.	प्रत्यय	14
5.	पर्यायवाची	18
6.	विलोम शब्द	29
7.	अनुवाद	37

राजस्थान का भूगोल

1.	राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल	43
2.	राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग	50
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र	61
4.	राजस्थान की झीलें	69
5.	राजस्थान की जलवायु	74
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	81
7.	राजस्थान में वन–संसाधन एवं वनस्पति	86
8.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	91
9.	राजस्थान में ऊर्जा स्त्रोत	100
10.	राजस्थान में पशुधन	109
11.	राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ	113
12.	राजस्थान की जनसंख्या	122
13.	राजस्थान में वन्यजीव एवं इनका संरक्षण	124
14.	राजस्थान में उद्योग	128

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

1. प्राचीन राजस्थान का इतिहास
   - परिचय 133
   - प्राचीन सभ्याताएँ 135
2. मध्यकाल राजस्थान का इतिहास
   - प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ 141
3. आधुनिक राजस्थान का इतिहास
   - 1857 की क्रांति 181
   - राजस्थान में किसान एवं जनजाति आन्दोलन 183
   - प्रजामण्डल आन्दोलन 186
   - राजस्थान का एकीकरण 191
4. राजस्थान कला एवं संस्कृति
   - राजस्थान के त्यौहार 194
   - राजस्थान के लोक देवता 201
   - राजस्थान की लोक देवियाँ 205
   - राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय 209
   - राजस्थान के लोकगीत 214
   - राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ 215
   - राजस्थान के संगीत 216
   - राजस्थान के लोक नृत्य 217
   - राजस्थान के लोकनाट्य 220
   - राजस्थान की जनजातियाँ 224
   - राजस्थान की चित्रकला 227
   - राजस्थान की हस्तकलाएँ 232
   - राजस्थान का साहित्य एवं प्रकार 234
   - राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ 239

5. राजस्थान की स्थापत्य कला

- किले एवं स्मारक 241
- राजस्थान के जिले एवं धार्मिक स्थल 250
- राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 253
- राजस्थान का खान–पान, वेश–भूषा एवं आभूषण 258

राजस्थान : राजव्यवस्था

1. राज्य की कार्यपालिका 261
2. राज्य की राजनीति 269
3. सचिवालय 277
4. संभाग 283
5. जिला 284
6. उपखण्ड अधिकारी 287
7. तहसीलदार 289
8. पुलिस प्रशासन 290
8. पटवारी 293
9. राज्य निर्वाचन आयोग 294
10. राजस्थान लोक सेवा आयोग **(RPSC)** 297
11. संघ लोक सेवा आयोग **(UPSC)** 298
12. वित्त आयोग 301
13. राष्ट्रीय विकास परिषद् 302
14. अन्तर्राज्यीय परिषद् 303
15. राज्य सूचना आयोग 304
17. स्थानीय स्वशासन 306
18. नगरीय संस्थाएँ 312
19. महानगरीय योजना समिति 317
20. नगरीय संस्थाएँ बोर्ड 318
21. राज्य वित्त आयोग 320

संधि

- संधि का शाब्दिक अर्थ – मेल/जोडना
- संधि का संधि विच्छेद – सम् + धि
- संधि शब्द का विलोम – विग्रह/विच्छेद
  जैसे :- जगत् + ईश – जगदीश

- संधि – दो या दो से अधिक वर्णो के मेल होने से वर्णो में विकार उत्पन्न होता है और नये सार्थक शब्द की रचना हो जाती है उन्हें संधि कहते है ।

- संधि सदैव समान अर्थ में होती है । विरोधी अर्थो में संधि नहीं होती है ।

- विश्व + अनाथ – विश्वनाथ – विश्व नाथ
  विश्व + अमित्र – विश्वामित्र – विश्व मित्र
  दीन+अनाथ – दीनानाथ – दीन नाथ
  षट् + अंग – षडंग
- संधि में सदैव वर्णो में विकार परिवर्तन उत्पन्न होना चाहिए तो संधि होती है । यदि वर्णो में विकार उत्पन्न नहीं होता है तो संधि नहीं होकर वह संयोग कहलाता है ।

- अन् + उचित / अनुचित
  संयोग – निर् + अर्थक / निरर्थक
  सम् + उचित / समुचित

संधि के भेद

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

- स्वर संधि :- यदि स्वर के बाद स्वर आता है तो स्वर में विकार उत्पन्न हो जाता है उसे स्वर संधि कहते है ।

स्वर संधि के पाँच भेद :-

1. दीर्घ स्वर संधि :- (आ, ई, ऊ)

नियम

1. यदि अ/आ के बाद सवर्ण अ या आ आता है तो दोनो के स्थान पर दीर्घ एकादेश 'आ' हो जाता है ।

2. इ या ई के बाद सवर्ण इ या ई आता है दोनों के स्थान पर दीर्घ एकादेश 'ई' हो जाता है ।

- नियम 3 – यदि उ या ऊ के बाद सवर्ण उ या ऊ आता है तो दोनों के स्थान पर दीर्घ एकादेश 'ऊ' हो जाता है ।
- उदाहरण – अ /आ या आ /अ

दाव + अग्नि = दावाग्नि जगंल की आग
राम + अयन = रामायण
पंच + आयत = पंचायत
मुक्ता + अवली = मुक्तावली
दीप + अवली = दीपावली

वडवा + वडव अग्नि – वडवाग्नि समुद्र की आग
काम + अग्नि – कामाग्नि
जठर + अग्नि – जठराग्नि पेट की आग
रवि + इन्द्र – रवीन्द्र
कवि + ईश – कवीश
नदी + ईश – नदीश
मही + इन्द्र – महीन्द्र
वधू + उल्लास – वधूल्लास
चमू + उल्लास – चमूल्लास
भानु + उदय – भानूदय
धेनू + उत्सव – धेनूत्सव

2. <u>गुण सन्धि</u> –

नियम 1 – यदि अ, आ के बाद इ या ई आये तो ए हो जाता है ।
नियम 2 – अ, आ के बाद उ या ऊ आता है तो दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है ।
नियम 3 – अ, आ के बाद ऋ आता है तो दोनो के स्थान पर 'अर' हो जाता है ।

उदाहरण – महा + ईश – महेश
महा + इन्द्र – महेन्द्र
रमा + ईश – रमेश
गण + ईश – गणेश
राका + ईश – राकेश
हर्षीक + ईश – हर्षीकेश
वसंत + उत्सव – वसंतोत्सव
गंगा + उत्सव – गंगोत्सव
गंगा + ऊर्मि – गंगोर्मि
समुद्र + ऊर्मि – समुद्रोर्मि
शीत + उत्सव – शीतोत्सव
महा + ऋषि – महर्षि

- <u>सन्धि</u> –

नियम 1 – अ, आ के बाद ए या ऐ आता है तो दोनो के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है।
नियम 2 – यदि अ, आ के बाद ओ या औ आता है तो दोनो के स्थान पर 'औ' हो जाता है।

उदाहरण – सदा + एव – सदैव
महा + ऐश्वर्य – महैश्वर्य
महा + ओज – महौज
महा + ओघ – महौघ
जल + ओघ – जलौघ
महा + औषधि – महौषधि
महा + औषधालय – महौषधालय
एक + एक – एकैक
तथा + एव – तथैव

अपवाद :-
प्र + ऊढ – प्रौढ
अक्ष + ऊहिनी – अक्षौहिनी
स्व + ईरिणी – स्वैरिणी नदी को कहते है
शुद्ध + ओदन – शुद्धोदन

4. यण् सन्धि

नियम 1 – इ, ई के बाद असमान स्वर आता है तो इ ई के स्थान पर 'य्' हो जाता है ।
नियम 2 – उ, ऊ के बाद असमान स्वर आता है तो उ ऊ के स्थान पर 'व्' हो जाता है ।
नियम 3 – ऋ के बाद असमान स्वर आता है तो ऋ के स्थान पर 'र्' हो जाता है ।

अक्षर से पहले आधा अक्षर आता है तो 99% यण सन्धि होगी ।

उदाहरण –
अधि + अयन – अध्ययन
अधि + आय – अध्याय
अनु + अय – अन्वय
गुरू + आदेश – गुर्वादेश
भानु + आगम – भान्वागम
सु + आगत – स्वागत
सु + आर्थ – स्वार्थ
सु + अच्छ – स्वच्छ
सु + अल्प – स्वल्प
मातृ + आज्ञा – मात्राज्ञा
पितृ + आज्ञा – पित्राज्ञा
मातृ + आदेश – मात्रादेश
भ्रातृ + ऐश्वय – भ्रात्रैश्वर्य
धातृ + अंश – धात्रैश

5. अयादि सन्धि

नियम 1 – ए के बाद कोई भी स्वर आता है तो ए के स्थान पर अय् हो जाता है।
नियम 2 – ऐ के बाद कोई भी स्वर आता है तो ऐ के स्थान पर आय् हो जाता है ।
नियम 3 – ओ के बाद कोई स्वर आता है तो ओ के स्थान अव् हो जाता है ।
नियम 4 – औ के बाद कोई स्वर आता है तो औ के स्थान पर आव् हो जाता है ।

उदाहरण –
ने + अन – नयन
गै + अन – गायन
पो + इत्र – पवित्र
श्रो + अन – श्रवण

रौ + अन – रावण
विधै + अक – विधायक
चे + अन – चयन

पो + अन – पवन
धौ + अक – धावक

व्यंजन सन्धि

व्यंजन सन्धि – व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आता है तो व्यंजन मे विकार उत्पन्न हो जाता है उसे व्यंजन सन्धि कहते है ।

नियम 1 –किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद यदि काई स्वर आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –
जगत् + ईश –जगदीश
वाक् + ईश्वर – वागीश्वर
वाक् + ईश्वरी – वागीश्वरी
उत् + आहरण – उदाहरण

नियम 2 –किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद यदि किसी वर्ग का तीसरा, चौथा या य,व, र वर्ण आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।

उदाहरण –
सत् + धर्म – सद्धर्म
षट् + रस – षड्रस
षट् + रिपु – षड्रिपु
अप् + ज – अब्ज (कमल)
अप् + द – अब्द (बादल)

नियम 3 – यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद 'ह' आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है और ह के स्थान पर भी उसी वर्ग का चौथा वर्ण हो जाता है।

उदाहरण –

उत् + हार – उद्धार
तत् + हित – तद्धित
रत्नमुट् + हिंसा – रत्नमुंडिसा
वाक् + हरि – वाग्धरि

नियम 4 – यदि किसी 'वर्ग के चतुर्थ वर्ण के बाद किसी भी वर्ग का चतुर्थ वर्ण आता तो चतुर्थ वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –

वुध् + अध – बुद्धि
सिध् + ध – सिद्ध
लभ् + धि – लब्धि
युध् + ध – युद्ध

नियम 5 – यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद किसी वर्ग का पंचम वर्ण आता है तो प्रथम वर्ण के स्थान पर भी उसी वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –

जगत् + नाथ – जगन्नाथ
सत् + मति – सन्मति
मृत + मय – मृन्मय
मृत् + मूर्ति – मृन्मूर्ति
वाक् + मय – वाङ्मय

नियम 6 – यदि म के बाद क से लेकर म तक कोई वर्ण आता है तो म का अनुस्वार हो जाता है या फिर अगले वर्ण का पंचम वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –

सम् + धि – संधि/ सन्धि
सम् + गढन – संगठन
सम् + जय – संजय
अलम् + कार – अलंकार
शम् + कर – शंकर
सम् + कर – संकर

संगंठन – सङ्गठन – सडठन
अलंकार – अलङ्कार – अलडकार
शंकर – शडकर

नियम 7 – यदि म के बाद य र ल व ष श स ह आता है तो म के स्थान पर केवल अनुस्वार हो जाता है ।

उदाहरण –

सम् + यम – संयम
सम् + शोधन – संशोधन
सम् + सार – संसार
सम् + विधान – संविधान
सम् + हार – संहार

नियम 8 – सम् उपसर्ग के बाद क धातु से बने हुए शब्द
(कार, करण, कर्ता, कर) आदि आता है तो म का अनुस्वार हो जाता है और बीच में स् का आधम हो जाता है ।

उदाहरण –

सम् + कार – संस्कार
सम् + कृत – संस्कृत
सम् + करण – संस्करण
सम् + कृति – संस्कृति

नियम – 9 यदि परि उपसर्ग के बाद कृ धातु से बने हुए शब्द (कार, कर्ण, कर्ता, कर, कृति) आते है तो बीच में मुर्धा ष् का आगम हो जाता है ।
कर्तव्य – सही कर्तव्य , कर्त्ता – सही कर्ता

उदाहरण –

परि + करण – परिष्करण
परि + कार – परिष्कार
परि + कर्ता – परिष्कर्ता

नियम 10 – यदि त् द् के बाद स्थ आता है तो स्थ के स् लोप हो जाता है ।

उदाहरण –

उत् + स्थान = उत्थान
उत् + स्थित = उत्थित जागना
उत् + स्थानम् = उत्थानम्

नियम 11 – यदि त द् के बाद क ख प फ त स आता है तो त्, द् के स्थान पर त् हो जाता है ।

उदाहरण –

उद् + कर्ष – उत्कर्ष
उद् + + तम – उत्तम
तद् + पुरूष – तत्पुरूष
संसद् + सत्र – संसत्सत्र
उद् + खनन – उत्खनन

नियम 12 – यदि निस् दुस् उपसर्ग के बाद क, ट, प, फ आता है तो निस् दुस् के स् के स्थान पर मुर्धा ष् हो जाता है ।

उदाहरण –

निस् + कर्ष – निष्कर्ष
निस् + टंकार – निष्टंकार (आवाज न करना)
दुस् + कर्म – दुष्कर्म
दुस् + पाप – दुष्पाप
दुस् + फल – दुष्फल

नियम 13 – ष के बाद त, थ आता है तो त के स्थान पर ट, एवं थ के स्थान पर ठ हो जाता है ।

उदाहरण – सृप् + ति – सृष्टि
दृष् + ति – दृष्टि
हृष् + त – हृष्ट
पुष् + त –पुष्ट
षष् + थ – षष्ठ

नियम 14 – यदि इ/उ के बाद स आता है तो स के स्थान पर ष हो जाता है ।

उदाहरण – अभि +सेक – अभिषेक
नि + संग – निषंग
नि + सेध –निषेध
वि + सम – विषम
सु + समा – सुषमा

नियम 15 - यदि इ/उ के बाद स्थ आता है तो स्थ के स्थान पर ष्ठ हो जाता है ।

उदाहरण – नि + स्था – निष्ठा
प्रति + स्था – प्रतिष्ठा
प्रति + स्थित –प्रतिष्ठित
युधि + स्थिर – युधिष्ठिर

नियम – 16 यदि किसी स्वर के बाद अगर छ आता है तो बीच में च् का आगम हो जाता है ।

उदाहरण – अनु + छेद – अनुच्छेद
वि + छेद – विच्छेद
परि + छेद– परिच्छेद (चारों तरफ का)
मातृ + छाया – मातृच्छाया
लक्ष्मी + छाया – लक्ष्मीच्छाया

नियम 17– यदि त्/द के बाद अगर च, छ आता है तो त् द् के स्थान पर भी च् हो जाता है ।

उदाहरण – सत् + चित = सच्चित
सत् + चरित्र = सच्चरित्र
उत् + छेद = उच्छेद
उत् + चारण = उच्चारण
उत् + छिन्न = उच्छिन्न
शरत् + चन्द्र = शरच्चन्द्र

नियम 18 – यदि त्, द् के बाद ज या झ आता है तो त् द् के स्थान पर भी ज् हो जाता है।

उदाहरण –

विद्युत् + ज्योति = विद्युज्जयोति
जगत् + ज्वाला = जगज्जवाला (जगत की ज्वाला)
उत् + ज्वल = उज्जवल
वहत् + झंकार = वहज्झंकार
महत् + झंकार = महज्झंकार

नियम 19 –यदि क, त्, द् के बाद ट, ठ हो तो त् द् के स्थान पर भी ट् हो जाता है ।

उदाहरण –

तत् + टीका = तट्टीका
वृहत् + टीका = वृहट्टीका

2. त्, द् के बाद ड, ढ हो तो ड् हो जाता है ।

उदाहरण –

उत् + डयन = उड्डयन
उत् + डीन = उड्डीन

नियम 20 – त् द् के बाद ल हो तो त् द् के स्थान पर भी ल् हो जाता है ।

उदाहरण –

तत् + लीन = तल्लीन
तत् + लय = तल्लय
उत् + लेख = उल्लेख
उत् + लिखित = उल्लिखित

नियम 20 – यदि न् के बाद ल् हो तो न् का ल् हो जाने पर न् से पूर्व आए वर्ण पर अर्द्धचन्द्र बिन्दु का आगम हो जाता है ।

उदाहरण –

विद्वान् + लिखति – विद्वाँल्लेख
महान् + लिखति – महाँल्लिखति
महान् + लेख – महाँल्लेख
विद्वान् + लेख – विद्वाँल्लेख

नियम 21 – यदि त् द् के बाद ष आता है तो त, द् के स्थान च् हो जाता है और ष के स्थान पर छ हो जाता है ।

उदाहरण –

तत् + शिव – तच्छिव
उत् + श्वास – उच्छ्वास
श्रीमत् + शरत् + चन्द्र – श्रीमच्छरचन्द्र

नियम 22 –यदि अहन् के बाद र से भिन्न वर्ण आता है तो न् के स्थान पर र् हो जाता है ।

उदाहरण –

अहन् + पति – अहपति (दिन का स्वामी)
अहन् + ऐश्वर्य – अहरैश्वर्य
अहन् + गण – अहगण
अहन् + अहन् – अहरह

अहन् के बाद अहन आता है तो अन्तिम न् का लोप हो जाता है।

नियम 23 –यदि अहन् के बाद र वर्ण आता है तो अहन् के स्थान पर अहो हो जाता है ।

उदाहरण–

अहन् + रथ – अहोरथ
अहन् + रूप – अहोरूप
अहन् + रात्रि – अहोरात्रि – अहोरात्र
अहोरात्र द्वन्द्व समास

नियम 24 – ऋ, र ष के बाद न का ण हो जाता है ।

उदाहरण –

प्र + नाम – प्रणाम
परि + नाम – परिणाम
परि + नय – परिणय
ऋ + न – ऋण
राम + अयन – रामायण दीर्घ
मीरा + अयन – मीरायण दीर्घ

नियम 25 – यदि म से पहले च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग या श स, ह, ल आता है तो न का ण नहीं होता है ।

उदाहरण –

रस + अयन – रसायन
दक्षिण + अयन – दक्षिणायन
राजा + अयन – राजायन

वर्णलोप –

पक्षिन् + राज – पक्षिराज
प्राणिन् + नाथ – प्राणिनाथ
युवन् + राज – युवराज
प्रणिन् + शास्त्र – प्राणिशास्त्र

विसर्ग सन्धि (:)

विसर्ग सन्धि – यदि विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आता है तो विसर्ग स्थान पर विकार उत्पन्न हो जाता है उसे विसर्ग सन्धि कहते है ।

नियम 1 – यदि विसर्ग के बाद त, थ आता है तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है ।

उदाहरण –

नमः + ते – नमस्ते
मनः + ताप – मनस्ताप
शिरः + त्राण – शिरस्त्राण (सिर की रक्षा करना)
बहिः + थल – बहिस्थल
मनः + त्याग – मनस्त्याग
निः + तेज – निस्तेज

नियम 2 – यदि विसर्ग के बाद च, छ आता है तो विसर्ग के स्थान पर श् हो जाता है ।

उदाहरण –

निः + चय – निश्चय
निः + छल – निश्छल
मनः + चिकित्सक – मनश्चिकित्सक
दुः + छल – दुश्छल
आः + चय – आश्चर्य
मनः + चिकित्सा –मनश्चिकित्सा

नियम 3 – यदि विसर्ग से पहले इ या उ और विसर्ग के बाद क ह ट प फ म आता है तो विसर्ग के बाद क ह ठ प जाता है ।

उदाहरण –

धनुः + टंकार – धनुष्टंकार
आविः + कार – आविष्कार
आयुः + मति – आयुष्मति
आयुः + मान – आयुष्मान
चतुः + पाद – चतुष्पाद
चतुः + कोण – चतुष्कोण
परिः + कार – परिष्कार

नियम 4 – यदि विसर्ग के बाद (ष , श , स) आता है तो विसर्ग का लोप नही होता है या फिर बाद वाला वर्ण हो जाता है ।

उदाहरण –

नमः + शिवाय – नमः शिवाय
नि : + शुल्क – निः शुल्क
दुः + स्वप्न – दुः स्वप्न

दुः + शासन – दुः शासन
प्रातः + स्मरण – प्रातः स्मरण

नमश्शिवाय, निश्शुल्क, दुस्स्वप्न, दुश्शासन, प्रातस्स्मरण

नियम 5 – यदि विसर्ग से पहले अ, आ हो और विसर्ग के बाद कृ धातु (कार, कृत, कृति, करण कर्ता) से बने शब्द आते हैं तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है ।

उदाहरण –
पुरः + कार – पुरस्कार
तिरः + कार – तिरस्कार
भाः + कार – भास्कर
नमः + कार –नमस्कार
वाचः + पति – वाचस्पति
गृहः + पति – गृहस्पति
बृहः + पति – बृहस्पति

नियम 6 – यदि विसर्ग के पहले अ, इ, उ, हो और विसर्ग के बाद घोष वर्ण हो (य र व ल ह) स्वर आता है तो विसर्ग के स्थान पर र् हो जाता है ।

उदाहरण –
दुः + गम – दुर्गम
निः + धन – निर्धन
पुनः + विवाह – पुनर्विवाह
आशीः + वाद – आशीर्वाद
निः + अन्तर – निरन्तर
पुनः + वास – पुनर्वास
निः + बल – निर्बल
निः + अभ्र – निरभ्र
निरन्तर, दुरात्मा, निरजंन, निरभ्र – बिना बादल

नियम 7 – यदि विसर्ग के पहले इ या उ हो और विसर्ग के बाद र हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उससे पहले इ या उ का दीर्घ हो जाता है ।

उदाहरण –
निः + रस – नीरस
निः + रोग – नीरोग
दुः + राज – दूराज
निः + रज – नीरज
नीर + ज – जल में जन्म लेने वाला

नियम 8 – यदि विसर्ग से पहले से अ हो और विसर्ग के बाद भी अ हो तो पहले वाला अ और विसर्ग मिलकर ओ हो जाता है और बाद वाले अ अवग्रह चिह्न हो जाता है ।

उदाहरण–
कः + अपि – कोऽपि
मनः – अनुकूल – मनोऽनुकूल
मनः + अभिलाषा – मनोऽभिलाषा
शिवः + अर्च्य – शिवोऽर्च्य

नियम 9 –
यदि पदान्त अ के परे विसर्ग हो और विसर्ग के परे कोई सघोष व्यंजन अथवा य, र, ल, व, ह् में से कोई एक वर्ण हो तो पदान्त अ + : = अः के स्थान पर 'ओ' हो जायेगा ।

उदाहरण –
मनः + ज – मनोज
मनः + हर – मनोहर
अधः + गति – अधोगति
मनः + विज्ञान – मनोविज्ञान
सरः + ज – सरोज
यशः + दा – यशोदा

नियम 10 – यदि विसर्ग के बाद क ख प फ आता है तो विसर्ग का लोप नही होता है

उदाहरण –
प्रातः + काल – प्रातः काल
नाभः + कतन – नाभः केतन
अन्तः + पुर – अन्तः पुर
मनः + पूत – मनः पूत

समास

समास का अर्थ – संक्षिप्तीकरण
समास का शाब्दिक अर्थ – समान रूप से पास आना

समास का विग्रह – सम् + आस अर्थात् समास
इसमें कोई सन्धि नही है संयोग है ।

समास शब्द का विलोम – व्यास
वि + आस – व्यास यण् संधि

- दो या दो से अधिक पदो का मेल होता है और बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है उसे समास कहते है ।
- मिले हुए पदों को सामासिक पद कहते है । रसोई घर समास का विग्रह रसोई के लिए घर ।
- रसोईघर – रसोई के लिए घर ।
- समास सदैव विग्रह पर निर्भर करता है पद के विग्रह के आधार पर ही समास का नामकरण होता है ।
- समास में कम से कम दो पद होते है प्रथम पद को पूर्व पद कहते है द्वितीय पद को उत्तर पद कहते है ।

विग्रह के आधार पर समास के भेद –
1. नित्य जाति
2. अनित्य जाति

1. नित्य जाति – जिस समास का सामान्य रूप में विग्रह नहीं होता है वह नित्य जाति का समास कहलाता है । – अव्ययीभाव

2. अनित्य जाति –जिस समास का सामान्य रूप में विग्रह हो जाता है उन्हे अनित्य जाति का समास कहते है ।

- समास के 6 भेद होते है –
  1. अव्ययीभाव समास
  2. तत्पुरूष समास
  3. कर्मधारय समास
  4. द्विगु समास
  5. द्वन्द्व समास
  6. बहुब्रीहि समास

- <u>अव्ययीभाव समास</u> – जिस समास में प्रथम पद अव्यय होता है और वही प्रधान होता है तथा दूसरा पद संज्ञा होता है । उसे अव्ययीभाव समास कहते है ।

अव्ययीभाव समास के दो भेद माने जाते है :-
1. पूर्व अव्ययपद
2. पूर्व नाम पद

1. <u>पूर्व अव्ययपद</u> – इसमें पहला पद अव्यय होता है और दूसरा पद संज्ञा होता है ।

उदाहरण –
आमरण – मरण पर्यन्त/मरण तक
आजन्म – जन्म पर्यन्त
यथाशक्ति – शक्ति के अनुसार
यथा क्रम – क्रम के अनुसार/जैसा क्रम
यथा संभव – जैसा संभव हो ।
यथागति – गति के अनुसार/जैसी गति
प्रतिदिन – दिन – दिन/हर दिन
प्रतिवर्ष – हर वर्ष/वर्ष –वर्ष
प्रत्येक – हर एक या एक – एक
जीवनभर – पूरा जीवन
भरपेट – भेट भरकर

2. <u>पूर्वनाम पद अव्ययीभाव समास</u> –
इसमें पहला पद आता है तथा जहाँ दो संज्ञा शब्द समान रूप में आ जाते है वहाँ पर भी पूर्वनाम पद अव्ययीभाव होता है ।

उदाहरण – रातोंरात – रात ही रात में
हाथोहाथ – हाथ ही हाथ में
बीचोंबीच – बीच के भी बीच में
घर घर – प्रतिघर / घर घर
दिन दिन – प्रतिदिन / हरदिन
वर्ष वर्ष – हरवर्ष/प्रतिवर्ष
जीवन भर – पूरा जीवन

- <u>तत्पुरूष समास</u> – जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है और प्रथम पद विशेषण जैसा होता है विशेषण नही होता तो उसे तत्पुरूष समास कहते है ।

उदाहरण –
अहरह – अहन + अहन् व्यंजन संधि
दिन – दिन अव्ययीभाव समास
लुप्त कारक चिन्ह तत्पुरूष समास

जिस कारक चिह्न का लोप हो जाता है उसी के आधार पर समास का नामकरण हो जाता है ।

कारक विभक्ति चिह्न –
कर्ता – ने
कर्म – को
करण – से सहायता से द्वारा, के द्वारा
सम्प्रदान – के लिए
अपादान – से अलग होना
सम्बन्ध – का, के की,
अधिकरण – में या पर
सम्बोधन – हे अरे ! ओ

➢ कर्म तत्पुरूष समास (को)

उदाहरण –
गृहागत – घर को गया (आगत)
बाजार गत – बाजार को गया
ग्राम गत – गाँव को गया
गगनचुम्बी – गगन को चुमने वाला
स्वर्गगत – स्वर्ग को गया
दिलतोड – दिल को तोडने वाला

➢ करण तत्पुरूष समास – (से)

उदाहरण –
तृष्णापीडित – तृष्णा से पीडित
कामपीडित – काम से पीडित
ज्वरपीडित – ज्वर से पीडित
हस्तलिखित – हस्त से लिखित
वाग्युद्ध – वाक के द्वारा युद्ध

विशेष बात –
अंग विकार के योग में करण तत्पुरूष समास होता है ।
कर्णबधिर – कान से बहरा
पादपंगु – पैर से लगडा
धर्मांध मदान्ध – मोहांर्ध प्रथम अधिकरण को माने
धर्म मे अन्धा मद मे अन्धा मोह

➢ सम्प्रदान तत्पुरूष समास (के लिए)

उदाहरण –
विधानसभा – विधान के लिए सभा
विधानपरिषद् – विधान के लिए परिषद्
लोकसभा – लोक के लिए सभा
यज्ञशाला – यज्ञ के लिए शाला
रसोईघर – रसोई के लिए घर
गुरूदक्षिणा – गुरू के लिए दक्षिणा
कृषि भवन सम्बन्धी कार्यो – कृषि के लिए भवन
उद्योग भवन – उद्योग के लिए भवन

➢ अपादान तत्पुरूष (से अलग होना)
उदाहरण :-
कर्जमुक्त – कर्ज से मुक्त
ऋणमुक्त – ऋण से मुक्त
चिन्तामुक्त – चिंता से मुक्त
देशमुक्त – देश से निकाला
पथ भ्रष्ट – पथ से भ्रष्ट
विद्यालयगत – विद्यालय से आया
वनागत – राम वन से आया
ग्रामागत – (ग्राम गाँव) से आया ।

से लेकर अर्थ में अपादान तत्पुरूष समास होता है ।
जमांध – जन्म से अन्धा से लेकर अर्थ में होता है ।
बालांध – बचपन से अन्धा

उदाहरण :-
अश्वभीत – अश्व से भयभीत
अश्वरक्षित – अश्व से रक्षा करना
ओला – करकाभीत – ओले से डर

➢ सम्बन्ध तत्पुरूष समास – का के की
उदाहरण –
राष्ट्रपति – राष्ट्र का पति
राजकुमार – राजा का कुमार (पुत्र)
पशुबलि – पशु की बलि
मात्राज्ञा – माता की आज्ञा
मृगपालक – मृग का पालन

➢ अधिकरण तत्पुरूष समास – में, पर
उदाहरण :-
वनवास – वन में वास
आपबीती – आप पर बीती
नगर प्रवेश – नगर में प्रवेश
रामाश्रित – राम से आश्रित
शरणागत – शरण में आगत (में आया)

➢ नण् तत्पुरूष समास :- इस समास में न के स्थान पर यदि बाद में व्यंजन होता है तो अ हो जाता है न के बाद कोई स्वर आता है तो न के स्थान पर अन् हो जाता है ।

उदाहरण :-
न सत्य – असत्य
न उचित – अनुचित
न ऐतिहासिक – अनैतिहासिक
न आवश्यक – अनावश्यक
न ज्ञान – अज्ञान
न पर्णा – अपर्णा – पार्वती
न धर्म – अधर्म

न भय – अभय
पार्वती ने पत्ते खाना छोड दिया ।

➢ मध्यपद लोपी तत्पुरूष समास
लुप्तपद तत्पुरूष समास

उदाहरण :–
दही बडा – दही में डूबा हुआ बडा
रेलगाडी – पटरी पर चलने वाली गाडी
बैलगाडी – बैलो द्वारा खींचकर चलाई जाने वाली गाडी
गुडधानी – गुड में मिली हुई धानी
रसगुल्ला – रस में डूबा हुआ गुल्ला
घृतान्त – घी में पका हुआ अन्न

➢ उपपद तत्पुरूष समासः–
उत्तर पद में क्रिया रूप में प्रत्यय हो जिससे 'वाला' अर्थ प्रकट होता है ।

उदाहरणः–
जलद – जल को देने वाला
रचनाकार – रचना को करने वाला
मधुप – शहद – मधु को पीने वाला
नभचर – आकाश में चलने वाला
खग – (ख) आकाश में (ग)गमन करने वाला
स्वर्णकार – स्वर्णकार का काम करने वाला
कुम्भकार – कुम्भ को आकार देने वाला
राजनीतिज्ञ – राजनीति को जानने वाला

➢ अलुक तत्पुरूष समासः– जिसमें हमें कोई विभक्ति दिखाई देती है वह अलुक् तत्पुरूष समास कहलाता है ।

उदाहरण :–
वनचर – वन में विचरण करने वाला
विश्वभर – विश्व को भ्रमण करने वाला
वसुन्धरा – वसुओं को धारण करने वाला
खचर – ख आकाश में विचरण करने वाला

कर्मधारय समास

कर्मधारय समास में केवल और केवल विशेषता पाई जाती है । जहाँ विशेष्य की विशेषता बताई जाती है या उपमेय की उपमानता बताई जाती है वहाँ कर्मधारय समास होता है ।

नीलकमल – नीला है जो कमल
महापुरूष – महान है जो पुरूष
चरणकमल – कमल रूपी चरण
संध्यासुन्दरी – संध्या रूपी सुन्दरी
विद्यारत्न – विद्या रूपी रत्न
लाल मिर्च – लाल है जो मिर्च
कमल मुख – कमल रूपी मुख
पीला वस्त्र – पीला है जो वस्त्र
अम्बरपनघट – अम्बर रूपी पनघट
नीलीगाय – नीली है जो गाय
सतपुरूष – सत्य है जो पुरूष

विशेष बात :– यदि दोनो पद पूर्व पद उत्तर पद विशेषता बताने वाले आ जाते है तो वहाँ कर्मधारय समास नही होता है । वहाँ द्वन्द्व समास माना जाता है ।

हृष्ट – पुष्ट – हृष्ट और पुष्ट
मोटा – ताजा – मोटा और ताजा
नीला – पीला – नीला और पीला

5. द्वन्द्व समास :–
जिस समास में दोनो पद समास होते है उसे द्वन्द्व समास कहते है । द्वन्द्व समास के तीन भेद माने जाते है ।
1. इतरेतर द्वन्द्व – और एवं तथा
2. समाहार द्वन्द्व – आदि अथवा इत्यादि
3. वैकल्पिक द्वन्द्व – या अथवा वा

1. इतरेतर द्वन्द्व :–

उदाहरण :–
एकादश – एक और दश
माता – पिता = माता और पिता
लाल – पीला = लाल और पीला
कृष्ण – अर्जुन = कृष्ण और अर्जुन
इधर – उधर = इधर और उधर
यहाँ – वहाँ = यहाँ और वहाँ
अष्टादश = आठ और दश

विशेष बातः–
एक से दस तक संख्याओं तथा दस से भाज्य संख्याओं को छोडकर अन्य समस्त संख्या वाची शब्दों में द्वन्द्व समास होता है ।

उदाहरण :–
25 पच्चीस – पाँच और बीस
68 अडसठ – आठ और साठ

2. समाहार द्वन्द्व समास :–
हाथ पैर – हाथ – पैर आदि
चिट्ठी पतरि – चिट्ठी – पतरि आदि
बाल बच्चा – बाल – बच्चा आदि

फल फूल – फल – फूल आदि
बहु बेटी – बहु – बेटी आदि
चाय पानी – चाय – पानी आदि
धन दौलत – धन – दौलत आदि
पेड पौधे – पेड – पौधे आदि
भला बुरा – भला – बुरा आदि
कीडा मकोडा – कीडा – मकोडा आदि

विशेष बात :- इस समास में निर्थक शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है ।

जैसे:-

चाय – वाय – चाय आदि
रोटी – ओटी – रोटी आदि

3. वैकल्पिक द्वन्द्व :-

इस समास में विरूद्ध अर्थ वाले शब्द होते है ।

जैसे :- ठण्डा – गर्म – ठण्डा और गर्म
शितोष्ण – शीत और ऊष्ण
दिन रात – दिन और रात
सुख दुख – सुख या दुख
लाभ हानि – लाभ या हानि
धर्माधर्म – धर्म या अधर्म
दस बीस – दस या बीस
सौ दो सौ – सौ या दो सौ

बहुब्रीही समास :-

इस समास में न तो प्रथम पद प्रधान होता है और ना ही द्वितीय पद प्रधान होता है इसका अन्य पद प्रधान पद प्रधान होता है ।

इस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता है ।

उदाहरण :- है जिसका
गजानन – हाथी के मुख के समान मुख
चतुरानन – चार आनन है जिसके अर्थात् ब्रह्मा
पंचानन – पाँच आनन है जिसके अर्थात् शिव
षडानन – छः आनन है जिसके अर्थात् कार्तिक
दशानन – दस आनन है जिसके अर्थात् रावण
षठमुख – छः मुख है जिसके अर्थात् कार्तिक
आशुतोष – शीघ्र प्रसन्न होने वाला अर्थात् शिव
ऋषिकेश – इन्द्रियों का स्वामी है जो अर्थात् विष्णु
शाखामृग – शाखाओं पर विचरण करने वाला अर्थात् बन्दर
त्रयंबक – तीन नेत्र है जिसके अर्थात् शिव
चन्द्रचूड – सिर पर चन्द्रमा है जिसके अर्थात् शिव
सहस्त्राक्ष – हजारों आँखे है जिसके इन्द्र

द्विगु समास

जिस समास मे पहला पद संख्यावाची होता है और दूसरा पद संज्ञा होता है तथा समूह का बोध होता है उसे द्विगु समास कहते है ।

उदाहरण –

त्रिलोकी – तीन लोको का समूह
त्रिमुनि – तीन मुनियो का समूह
तिराहा – तीन राहो का समूह
चौराहा – चार राहों का समूह
सतक – सौ का समूह
त्रिवेणी – तीन नदियो का समूह
सतसई – सात सौ का समूह
सप्ताह – सात दिनों का समूह

उपसर्ग

उपसर्ग – उप + सर्ग से बना है उप का अर्थ समीप व सर्ग का अर्थ रचना होता है ।
परिभाषा – वे शब्दांश जो किसी शब्द के पूर्व जुडकर अर्थ में परिवर्तन कर देता है और नये सार्थक शब्द की रचना कर देता है उन्हे उपसर्ग कहते है ।

- उपसर्ग किसी शब्द पूर्व ही जुडते है । उपसर्ग शब्द नही होते शब्दांश होते है शब्द का टुकडा ।
- उपसर्गो का स्वतंत्र अर्थ नही होता और जो उनका अर्थ हाता है वह प्रभावित नही करता है ।
- उपसर्गो का अर्थ किसी शब्द के पूर्व लगकर ही अर्थ को प्रभावित करते है ।
- उपसर्ग तीन तरह से अर्थ को प्रभावित करते है :-
  1. सकारात्मक अर्थ
  2. नकारात्मक अर्थ
  3. विलोमार्थ/ विलोम जैसा

1. सकारात्मक –
   आचार्य –प्राचार्य
   सिद्धि – प्रसिद्धि

2. नकारात्मक – हार – प्रहार
   हार – संहार
   मान – अपमान

उदाहरण –

आ + हार – आहार	=	भोजन
प्र + हार – प्रहार	=	आक्रमण
सम् + हार – सहांर	=	मारना
उप + हार – उपहार	=	भेंट
वि + हार – विहार	=	घूमना
नि + हार – निहार	=	देखना

परि + धान = परिधान – वस्त्र
प्र + धान = प्रधान – मुख्य
उप + धान = उपधान – तकिया
अपि + धान = अपिधान – ढक्कन
अभि + धान = अभिधान – नाम
वि + धान = विधान – कानून

- उपसर्ग का स्वतंत्र रूप में प्रयोग नही होता है इनका प्रयोग शब्दों के साथ ही होता है और शब्दो के साथ लगकर ही अर्थ को प्रभावित करते है जो निम्नानुसार है ।

- उपसर्गो के प्रकार

  1. संस्कृत के उपसर्ग
  2. हिन्दी के उपसर्ग
  3. विदेशी उपसर्ग

उपसर्गो की संख्या (22) :-

- प्र – प्र
- परा – परा
- अप – अप
- सम् – सम्
- अनु – अनु
- अव – अव
- निस् – निस्
- निर – निर
- दुस – दुस
- दुर – दुर
- वि – वि
- आ – आ
- नि – अधि
- प्रति – अति
- परि – नु
- उप – उद्
- अपि – अभि
- अति – प्रति
- स – परि
- उद् – उप
- अभि
- अधि

1. प्र उपसर्ग – आगे / अधिक

प्रगति – प्र + गति
प्राचार्य – प्र + आचार्य (दीर्घ संधि)
प्रख्यात – प्र+ ख्यात (संयोग)
प्रतीत – प्र + अतीत

प्रोन्नति – प्र + उन्नति गुण सन्धि
प्रत्येक – प्रति + एक
प्रकार – प्र + कार
प्रचुर – प्र + चुर
प्रति + इत – प्रतीत

2. परा उपसर्ग – अधिक/पीछे
चरमसीमा – पराकाष्ठ – परा + काष्ठ
पराभव – परा + भव
पराविद्या – परा + विद्या
पराश्रित – पर + आश्रित उपसर्ग नही
पराधीन – प्र + पर + अधीन

3. अप उपसर्ग – बुरा / हीन
अपमान – अप + मान (संयोग)
आपराधिक – अप + राध + इक
अपक्व – अ + पक्व
अब्ज – अप् + ज
अब्द – अप् + द
अपेक्षा – अप + ईक्षा गुण सन्धि
अपहरण – अप + हरण
अपभरण – अप + भरण
अपच – अ + पच

4. सम् उपसर्ग – समान – विशुद्ध
संस्कार – सम् + कार
संस्कृति – सम् + कृति
समझ – अव्यय
संविधान – सम् + वि + धान

5. अनु उपसर्ग – पीछे / विपरीत
अन्वय – अनु + अय
आनुवांशिक – अनु + वंश + इक
अनुदार – अनु + दार
अनुत्तर – अनु + उत्तर
अनुर्वर – अन् + उर्वर
अनुदान – अनु + दान
अनुपातिक – अनु + पात + इक

6. अव उपसर्ग – बुरा / हीन
अवतार – अव + तार
अवधान – अव + धान
अवध – अव + ध
अवज्ञा – अव + ज्ञा
अवधी – अ + वध + ई

7. निस् उपसर्ग – बिना, बाहर
निश्चय – निस् + चय
निष्फल – निस् + फल
निश्छल – निस् + छल
निष्पाप – निस् + पाप

8. निर् उपसर्ग – बिना बाहर
निर्जन – निर् + जन (संयोग)
निर्धन – निर् + धन
नीरस – निर् + रस
नीराग – निर् + राग
निरन्तर – निर् + अन्तर
निरंजन – निर् + अंजन

9. दुस् उपसर्ग – बुरा, हीन, विपरीत
दुश्चिन्ता – दुस् + चिन्ता
दुश्चरित्र – दुस् + चरित्र
दुष्पाप – दुस् + पाप
दुष्फल – दुस् + फल
दुश्मन – दुस् + मन

10. दुर् उपसर्ग – बुरा, हीन, विपरीत
दुर्गम – दुर् + गम
दुर्ग – दुर् + ग
दुर्जन – दुर् + जन
दुर्दशा – दुर् + दशा

दुर् + अव + स्थ + आ , दुरावस्था नहीं होती है ।

11. वि उपसर्ग – विशेष या भिन्न
व्यास – वि + आस
व्याकरण – वि+ आ + करण
व्याकुल – वि + आकुल
व्यावहारिक – वि + अव + हार + इक
वैधव्य – वि + धवा + य
विवाह – वि + वाह
विद्या – विद् + या
वैवाहिक – वि + वाह + इक

12. आ उपसर्ग – तक / से
आजन्म – आ + जन्म
आमरण – आ + मरण
आम – आ + म
आजानुबाहु – आ + जानुबाहु

13. नि उपसर्ग – विशेष + बडा
निषंग – नि + संग
न्यास – नि + आस
न्याय – नि + आय
न्यस्त – नि + अस्त
निवास – नि + वास
निषेध – नि + सेंध

14. अधि उपसर्ग – श्रेष्ठ /ऊपर
अधित्यका – अधि + त्यका
अध्यक्ष – अधि + अक्ष
अधिक – मत् शब्द है
अधिकाधिक – उपसर्ग नही है
अध्याय – अधि + आय

अधीन – अधि + इन
अधीत – अधि + इत
अधिकार – अधि + कार

15. अपि उपसर्ग – भी परे
अपितु – अपि + तु
अप्यलम – अपि + अलम (थोडा)
अपिहित – अपि + हित
अपिधान – अपि + धान

16. अति उपसर्ग – अधिक
अत्यन्त – अति + अन्त
अत्याचार – अति + आचार
अतीत – अति + इत
अत्यधिक – अति + अधिक

17. सु उपसर्ग – सरल / सुन्दर
स्वच्छ – सु + अच्छ
स्वल्प – सु + अल्प
स्वागत – सु + आगत

18. उद्, उत् उपसर्ग – श्रेष्ठ / ऊपर
उच्चारण – उत् + चारण
उच्छ्वास – उत् + श्वास
उदार – मूल शब्द है ।

19. अभि उपसर्ग – सामने / पास
अभ्यास – अभि + आस
अभ्यर्थी – अभि + अर्थी
अभ्यागत – अभि + आगत

20. प्रति उपसर्ग – प्रत्येक / सामने
प्रत्युषा – प्रति + उषा
प्रत्येक – प्रति + एक
प्रतिदिन – प्रति + दिन
प्रत्युपकार – प्रति + उपकार

21. परि उपसर्ग – चारो ओर / पास
पर्यावरण – परि + आवरण
परीक्षा – परि + ईक्षा
परितः – उपसर्ग नही मूल शब्द

22. उपसर्ग – समीप / नीचे
उपत्यका – उप + अति + अका
उपकार – उप + कार
उपदेश – उप + देश
उपेक्षा – उप + ईक्षा
उपाध्यक्ष – उप + अधि + अक्ष
उपमंत्री – उप + मंत्री

प्रत्यय

1. प्रकृति – प्र + कृति
प्राकृतिक – प्र + कृति + इक
प्राध्यापक – प्र + अध्यापक
2. परा – पराक्रम – परा + क्रम
पराकाष्ठा, पराभव, परामर्श
3. अप – अपव्यय, अपकार, अपंग, अपांग (अप+अंग)
4. सम् – सम्मान, समाचार, संशय, सांस्कृतिक (सम् + कृति + इक)
5. अनु – अनूत्तर (अनु+उत्तर), अनुसार, अनूदित, आनुषंगिक
6. अव – अवमानना, अवहेलना, अवसर
7. निस् – निश्चिन्तता, निस्संकोच, निश्शुल्क/निःशुल्क
8. निर् – निरादर, निराशा, नीरव, नीरन्ध्र
नोट – नीरज (नीर+ज) में निर् उपसर्ग नहीं होता है ।
9. दुस् – दुष्परिणाम, दुश्शासन, दुष्प्रभाव
10. दुर् – दुराशा, दूरम्य, दौर्बल्य (दुर्+बल+य)
11. वि – विजय, व्यूह, व्यायाम, वीक्षक, वीप्सा
12. आ – आकाश, आजानुबाहु, आकण्ठ
13. नि – निष्ठा, न्यून, नैदानिक
14. अधि – अध्यादेश, अधीक्षक, आध्यात्मिक
15. अति – अत्यल्प
16. सु – सूक्ति, सौजन्य
17. उद्, उत् – उच्छ्रंखला (उत्+श्रृंखला), उन्नति, उत्तीर्ण
18. अभि – अभीष्ट, अभीप्सा, अभ्यागत
19. प्रति – प्रत्यर्पण, प्रतिज्ञा, प्रतिष्ठा, प्रतीक्षा
20. परि – पर्याप्त, पर्यंक, पारिवारिक
21. उप – उपाचार्य, औपचारिक

प्रत्यय

परिभाषा – वे शब्दांश जो संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण और क्रिया/धातु के बाद लगकर नये सार्थक शब्द की रचना कर देते हैं और अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं उन्हे प्रत्यय कहते हैं ।

प्रत्यय के प्रकार –

1. कृदन्त प्रत्यय (धातु के बाद के प्रत्यय)
2. तद्धित प्रत्यय (शब्द के बाद के प्रत्यय)

- धातु के बाद में जो प्रत्यय लगता है उसे कृदन्त प्रत्यय कहते हैं।
- शब्दो के बाद में जो प्रत्यय लगते हैं उन्हे तद्धित प्रत्यय कहते हैं ।

➢ कृदन्त प्रत्यय के भेद –
1. कर्तृवाचक
2. कर्मवाचक
3. भाववाचक
4. क्रियावाचक
5. करण वाचक/साधनवाचक

➢ तद्धित प्रत्यय के भेद –
1. कर्तृवाचक
2. भाव वाचक
3. सम्बन्ध वाचक
4. अपत्यवाचक / सन्तान वाचक
5. ऊनतावाचक / न्यूनतावाचक कर्म वाचक
6. स्त्रीवाचक

1. <u>कृदन्त प्रत्यय</u> –

1. कर्तृवाचक –

उदाहरण –
लेख + अक – लेखक
वाच + अक – वाचक
गै + अक – गायक
कृ + अक – कारक
चला + अक – चालक
भूल + अक्कड – भुलक्कड
घुम + अक्कड – घुमक्कड
पी + अक्कड – पियक्कड
लुट + एरा – लुटेरा

2. कर्मवाचक –

उदाहरण –
खेला + आना – खिलौना
बिछ + आना – बिछौना
सूंघ + नी – सूंघनी

3. भाववाचक –

उदाहरण –
बैठ + अक – बैठक
उठ + अक – उठक
दिखा + आऊ – दिखाऊ
टिक + आऊ – टिकाऊ
भिड + अन्त – भिडन्त
लड + आई – लडाई
घुम + आव – घुमाव
लिख + आवट – लिखावट
घबरा + आहट – घबराहट
बोल + ई – बोली
चुन + औती – चुनौती
बैठ + नी – बैठनी
उठक कट + आई – कटाई

4. क्रिया बोधक –

उदाहरण –
चल + हुआ – चलता हुआ
सुन + हुआ – सुनता हुआ
पढ + हुआ – पढता हुआ

5. करणवाचक साधन

उदाहरण –
बेल + अन – बेलन
झाड + अन – झाडन
खुरच + अन – खुरचन
लेखन + नी – लेखनी
कतर + नी – कतरनी
छल + नी – छलनी

तद्धित प्रत्यय

1. कर्तृवाचक
लोहा + आर – लुहार
कहा + आर – कहार
गँवा + आर – गँवार
सोना + आर – सुनार
घास + आरा – घसियारा
लाख + एरा – लखेरा

2. भाववाचक –
भला + आई – भलाई
बुरा + आई – बुराई
अच्छा + आई – अच्छाई

मोटा + आपा – मोटापा
बुढा + आपा – बुढापा
टीका + आयन – टीकायन
मीठा + आस – मिठास
बाप + औती – बापौती
काठ + औती – बपौती
लडका + पन – लडकपन
पागल + पन – पागलपन
बच्चा + पन – बचपन
छोटा + पन – छुटपन
लाल + इमा – लालिमा
गुरू + इमा – गरिमा
गर्म + ई – गर्मी

3. सम्बन्ध वाचक –
ससुर + आल – ससुराल
नानी + आल – ननिहाल
मामा + एरा – ममेरा
चाचा + एरा – चचेरा
रस + ईला – रसीला
जहर + ईला – जहरीला
पानी + ईला – पनिला – पानी जैसा रंग
कृपा + आलु – कृपालु
ईष्या + आलु – ईष्यालु
दया + आलु – दयालु
भाव + उक – भावुक
इच्छा + उक – इच्छुक
समाज + इक – सामाजिक
व्यवहार + इक – व्यावहारिक
चरित्र + इक – चारित्रिक

4. अपत्यवाचक (संतान वाचक)

मूलस्वर	दीर्घस्वर	गुणस्वर	वृद्धि स्वर
अ	आ	–	आ
इ	ई	ए	ऐ
उ	ऊ	ओ	औ
ऋ	ॠ	अर्	आर्

उदाहरण –
1. इक प्रत्यय
यदृच्छा + इक – यादृच्छिक
सर्वभूमि + इक – सार्वभौमिक
चरित्र + इक – चारित्रिक
युद्ध – समर + इक – सामरिक
व्यक्ति + इक – वैयक्ति
पशु – इक – पाशविक
न्याय + इक – न्यायिक/ नैयायिक

2. अ प्रत्यय :–
मगध + अ – मागध
मनु + अ – मानव
दनु + अ – दानव
पांडु + अ – पांडव
सिंधु + अ – सैन्धव
मुनि + अ – मौन
ओष्ठ + अ – औष्ठव

➢ इ प्रत्यय –
दशरथ + इ – दाशरथी
मरूत + इ – मारूति
सरथ + इ – सारथि
मिट्टी का ढेर वल्मीक + इ – वाल्मीकि

<u>ई प्रत्यय</u> –

जनक + ई –जानकी
गंधार + ई – गांधारी
द्रुपद + ई – द्रौपदी
मिथिला + ई – मैथिली
भागीरथ + ई – भागीरथी

<u>अयन प्रत्यय</u> –

राम + अयन – रामायण
नार + अयन – नारायण

<u>आयन प्रत्यय</u> –

काव्य + आयन – कात्यायन
वात्स्य + आयन – वात्स्यायन
मौद्गल्य + आयन – मौद्गल्यायन

<u>एय प्रत्यय</u> –

गंगा + एय – गांगेय
मृकंड + एय – मार्कंडेय
कृतिका + एय – कार्तिकेये
पथ + एय – पथिय
अभि + एय – अभिय

<u>य प्रत्यय</u> –

सदृश + य – सादृश्य
सहचर + य – साहचर्य
वत्सल + य – वात्सल्य